अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2013) | दिनांक 19.12.2013

चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

लघुदण्डक – 25

प्र.1 कोई चार द्वार लिखें – 16

(क) पर्याप्ति द्वार (ख) इन्द्रिय द्वार (ग) संस्थान द्वार (घ) दृष्टि द्वार (ङ) दर्शन द्वार

(च) ज्ञान द्वार।

प्र.2 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें – 9

(क) नरक की स्थिति लिखें।

(ख) लेश्या की परिभाषा लिखते हुए सात नारकी के अतिरिक्त शेष सभी की लेश्या लिखें। (लेश्या द्वार)

(ग) संज्ञी–असंज्ञी द्वार लिखें।

(घ) अज्ञान द्वार लिखें।

पांच ज्ञान – 25

प्र.3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 20

(क) अनानुगामिक तथा वर्धमान अवधिज्ञान की व्याख्या करें।

(ख) अवग्रह आदि का दो दृष्टांतों से निरूपण कीजिये।

(ग) ऋजुमति और विपुलमति मनःपर्यज्ञान की परिभाषा लिखते हुए मनःपर्यवज्ञान के विषय को क्षेत्रतः तथा कालतः व्याख्या करें।

(घ) प्रतिपाति अवधिज्ञान की व्याख्या करते हुए अवधिज्ञान के द्वारा देखने की शक्ति का यंत्र क्रमशः पुस्तक के आधार पर बनाएँ।

(ङ) केवल ज्ञान के विषयों को व्याख्यायित करें।

(च) तीर्थ सिद्ध, अतीर्थंकर सिद्ध, स्वयंबुद्ध सिद्ध, पुरुषलिंग सिद्ध, अनेक सिद्ध, बुद्ध बोद्धित सिद्ध के अर्थ लिखते हुए परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान के प्रकार के नाम लिखें।

प्र.4 किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखें – 5

(क) मनः पर्यवज्ञान प्रमत्त, कर्मभूमिज, संयत, अपर्याप्त में से किन–किन के होता है?

(ख) सम्यक श्रुत किसे कहते हैं?

(ग) पारिणामिकी बुद्धि किसे कहते हैं?

(घ) व्यंजनावग्रह की परिभाषा लिखें।

(ङ) गमिक श्रुतज्ञान की परिभाषा लिखें।

(च) श्रुत के समुच्चय रूप से चार प्रकार में से द्रव्यतः समझाएँ।

(छ) हेतु उपदेश की अपेक्षा से कौन से जीव संज्ञी तथा कौन से जीव असंज्ञी कहलाते हैं।

(गुणस्थान – दिग्दर्शन) गीतिका – 10

प्र.5 कोई दो पद्य भावार्थ सहित लिखें – 8

(क) ''मोह नो उदै–निपन.....लग तामो रे।।'' (ग) ''मोह तणी सत्ता.....मझारो रे।।''

(ख) ''संपराय में पुन्यपाप.....पेखो रे।।'' (घ) ''मोह खायक–निपन.....माणे रे।।''

प्र.6 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें – 2

(क) प्रथम समय के सिद्ध किन–किन कर्मों को क्षीण करते हैं?

(ख) ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय तथा अंतराय कर्म का उदय निष्पन्न भाव कौन से गुणस्थान तक होता है?

(ग) मोह कर्म का क्षायिक निष्पन्न भाव किन में पाता है?

(घ) ईर्यापथिक बंध किन गुणस्थान वालों के होता है?

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 40

प्र.7 सभी प्रश्नों के उत्तर देने अनिवार्य हैं – 12

(क) पच्चीस बोल – नौंवा बोल अथवा अजीव तत्त्व के 14 भेद। 3

(ख) चतुर्भंगी – संवर की अथवा ध्यान की चतुर्भंगी। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा – ध्यान अथवा शरीर की चर्चा। 3

(घ) तत्त्व चर्चा – अधर्म पर चर्चा अथवा छः द्रव्यों में रूपी अरूपी। 3

प्र.8 (क) जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड) – आत्म द्वार अथवा रूपी अरूपी द्वार? 3

(ख) प्रतिक्रमण – आलोचना सूत्र अथवा अभ्युत्थान सूत्र। 3

(ग) कर्म प्रकृति – ज्ञानावरणीय कर्म भोगने के हेतु अथवा मोहनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें। 3

(घ) बावन बोल – चौदह गुणस्थानों में शरीर कितने? 5

'अथवा'

उदय के तैंतीस बोल किस–किस कर्म के उदय से?

(ड.) इक्कीस द्वार – सभी बोल लिखें – 8

(i) सास्वादन सम्यक्त्वी (ii) चक्षुदर्शनी

(iii) सूक्ष्म संपराय संयति (iv) अपर्याप्त।

(च) जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खंड) – श्रावक गुण द्वार अथवा श्रावक चिंतनद्वार लिखें। 3

(छ) आनुपूर्वी नाम अथवा विहायोगति नाम की व्याख्या करें। 3